

रविवार 24 जनवरी, 2021

विषय — सत्य

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 86 : 11

"हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखा, तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा।"

उत्तरदायी अध्ययन:

भजन संहिता **100 : 1-5**

- 1 हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा का जयजयकार करो!
- 2 आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!
- 3 निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं; हम उसकी प्रजा, और उसकी चर्राई की भेड़ें हैं॥
- 4 उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!
- 5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता **117 : 1, 2**

- 1 भजन संहिता हे जाति जाति के सब लोगों यहोवा की स्तुति करो! हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसकी प्रशंसा करो!
- 2 क्योंकि उसकी करुणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है; और यहोवा की सच्चाई सदा की है याह की स्तुति करो!

2. 2 राजा **20 : 1-11**

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 1 उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर था, और आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता ने उसके पास जा कर कहा, यहोवा यों कहता है, कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे; क्योंकि तू नहीं बचेगा, मर जाएगा।
- 2 तब उसने भीत की ओर मुंह फेर, यहोवा से प्रार्थना कर के कहा, हे यहोवा!
- 3 मैं बिन्ती करता हूँ, स्मरण कर, कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जान कर चलता आया हूँ; और जो तुझे अच्छा लगता है वही मैं करता आया हूँ। तब हिजकिय्याह बिलक बिलक कर रोया।
- 4 और ऐसा हुआ कि यशायाह नगर के बीच तक जाने भी न पाया था कि यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा,
- 5 कि लौटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह से कह, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; देख, मैं तुझे चंगा करता हूँ; परसों तू यहोवा के भवन में जा सकेगा।
- 6 और मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा। और अशशूर के राजा के हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊंगा, और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करूंगा।
- 7 तब यशायाह ने कहा, अंजीरों की एक टिकिया लो। जब उन्होंने उसे ले कर फोड़े पर बान्धा, तब वह चंगा हो गया।
- 8 हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा, यहोवा जो मुझे चंगा करेगा और मैं परसों यहोवा के भवन को जा सकूंगा, इसका क्या चिन्ह होगा?
- 9 यशायाह ने कहा, यहोवा जो अपने कहे हुए वचन को पूरा करेगा, इस बात का यहोवा की ओर से तेरे लिये यह चिन्ह होगा, कि धूपघड़ी की छाया दस अंश आगे बढ़ जाएगी, व दस अंश घट जाएगी।
- 10 हिजकिय्याह ने कहा, छाया का दस अंश आगे बढ़ना तो हलकी बात है, इसलिए ऐसा हो कि छाया दस अंश पीछे लौट जाए।
- 11 तब यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यहोवा को पुकारा, और आहाज की घूपघड़ी की छाया, जो दस अंश ढल चुकी थी, यहोवा ने उसको पीछे की ओर लौटा दिया।

3. यशायाह 25 : 1, 8

- 1 हेयहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूंगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने आश्चर्यकर्म किए हैं, तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियां की हैं।
- 8 वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है॥

4. यूहन्ना 4 : 1, 3-7, 9-11, 13-26

- 1 फिर जब प्रभु को मालूम हुआ, कि फरीसियों ने सुना है, कि यीशु यूहन्ना से अधिक चले बनाता, और उन्हें बपतिस्मा देता है।
- 3 तब यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया।
- 4 और उस को सामरिया से होकर जाना अवश्य था।
- 5 सो वह सूखार नाम सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।
- 6 और याकूब का कूआं भी वहीं था; सो यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर यों ही बैठ गया, और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई।
- 7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई: यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला।
- 9 उस सामरी स्त्री ने उस से कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)।
- 10 यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।
- 11 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कूआं गहिरा है: तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहां से आया?
- 13 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा।
- 14 परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा: वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।
- 15 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊं और न जल भरने को इतनी दूर आऊं।
- 16 यीशु ने उस से कहा, जा, अपने पति को यहां बुला ला।
- 17 स्त्री ने उत्तर दिया, कि मैं बिना पति की हूं: यीशु ने उस से कहा, तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूं।
- 18 क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तू ने सच कहा है।
- 19 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है।
- 20 हमारे बाप दादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया: और तुम कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।
- 21 यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।
- 22 तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।

- 23 परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूँढ़ता है।
- 24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।
- 25 स्त्री ने उस से कहा, मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।
- 26 यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ॥

5. यूहन्ना 17 : 1, 6, 17

- 1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
- 6 मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया: वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है।
- 17 सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 7 : 13-21

विचारकों का समय आ गया है। सत्य, सिद्धांतों और समय-सम्मानित प्रणालियों से स्वतंत्र, मानवता के द्वार पर दस्तक देता है। अतीत के साथ संतोष और भौतिकवाद की ठंडी परम्परा के बीच टकराव कम हो रहा है। भगवान की अज्ञानता अब विश्वास के रास्ते का पत्थर नहीं है। आज्ञाकारिता का एकमात्र ज़मानता उसी की एक सही आशंका है जिसे जानने के लिए जीवन अनन्त है। यद्यपि साम्राज्य गिरते हैं, "प्रभु हमेशा के लिए शासन करेंगे।"

2. 259 : 6-14

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

3. 286 : 1-15

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

मानव सिद्धांत में विश्वास के माध्यम से सत्य की तलाश करना अनंत को समझना नहीं है। हमें परिमित, पारस्परिक, और नश्वर के माध्यम से अपरिवर्तनीय और अमर की तलाश नहीं करनी चाहिए, और इसलिए प्रदर्शन के बजाय विश्वास पर निर्भर रहना चाहिए, क्योंकि यह विज्ञान के ज्ञान के लिए घातक है। सत्य की समझ सत्य में पूर्ण विश्वास देती है, और आध्यात्मिक समझ सभी जले हुए प्रसादों से बेहतर है।

मास्टर ने कहा, "बिना मेरे द्वारा कोई पिता (होने का दिव्य सिद्धांत) के पास नहीं पहुंच सकता।" मसीह, जीवन, सत्य, प्रेम के बिना; क्योंकि मसीह कहता है: "मार्ग मैं हूं।" इस मूल पुरुष, यीशु द्वारा पहले से लेकर आखिर तक शारीरिक कार्य को अलग रखा गया था। वह जानता था कि दिव्य सिद्धांत, प्रेम, वास्तविक सब कुछ बनाता और संचालित करता है।

4. 231 : 3-11

जब तक एक बीमार सही तरीके से नहीं मिलता है और सच्चाई से काफी हद तक दूर हो जाता है, तब तक बीमार पर विजय नहीं मिलती है। यदि परमेश्वर पाप, बीमारी, और मृत्यु को नष्ट नहीं करता है, तो वे नश्वर लोगों के दिमाग में नष्ट नहीं होते हैं, बल्कि इस तथाकथित मन को अमर लगते हैं। भगवान जो नहीं कर सकता, उसके लिए आदमी को प्रयास करने की जरूरत नहीं है। यदि परमेश्वर बीमारों को नहीं चंगा करता है, तो वे चंगे नहीं होते हैं, क्योंकि कोई भी कम शक्ति अनंत-शक्ति के बराबर नहीं होती है; लेकिन परमेश्वर, सत्य, जीवन, प्रेम, धर्म की प्रार्थना के माध्यम से बीमारों को चंगा करता है।

5. 167 : 22-31

अड़ियल और आधे-अधूरे पद पर बैठना या आत्मा और भौतिक, सत्य और त्रुटि के साथ समान रूप से काम करने की अपेक्षा करना बुद्धिमानी नहीं है। एक तरीका है - ईश्वर और उसका विचार - जो आध्यात्मिक होने की ओर ले जाता है। शरीर की वैज्ञानिक सरकार को दिव्य मन के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए। शरीर पर किसी अन्य तरीके से नियंत्रण हासिल करना असंभव है। इस बुनियादी बिंदु पर, डरपोक रूढ़िवाद बिल्कुल बेवजह है। केवल सत्य पर कट्टरपंथी निर्भरता के माध्यम से वैज्ञानिक उपचार शक्ति का एहसास किया जा सकता है।

6. 230 : 1-10

यदि बीमारी वास्तविक है, तो यह अमरता से संबंधित है; अगर यह सच है, यह सत्य का एक हिस्सा है। क्या आप सत्य की गुणवत्ता या स्थिति को नष्ट करने के लिए दवाओं के साथ या बिना प्रयास करेंगे? लेकिन अगर बीमारी और पाप भ्रम हैं, तो इस नश्वर सपने से जागृति, या भ्रम, हमें स्वास्थ्य, पवित्रता और अमरता में लाएगा। यह जागृति हमेशा के लिए मसीह के आने की है, सत्य का उन्नत रूप है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमारों

को ठीक करता है। यह वह मोक्ष है जो ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत और प्रेम के माध्यम से आता है, जैसा कि यीशु द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

7. 130 : 26-5

यदि ईश्वर या सत्य के वर्चस्व के लिए विज्ञान के मजबूत दावे पर विचार किया गया है, और अच्छाई के वर्चस्व पर संदेह किया गया है, क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि, दुष्टतापूर्ण, बुराई के जोरदार दावों पर चकित होना और उन पर संदेह करना, और अब उसे त्यागने के लिए पाप और अप्राकृतिक प्रेम करना स्वाभाविक नहीं लगता, - अब बुराई की कभी भी कल्पना करना अच्छा नहीं है और वर्तमान अच्छा है? सत्य को त्रुटि के रूप में इतना आश्चर्यजनक और अप्राकृतिक नहीं होना चाहिए, और त्रुटि को सत्य के रूप में वास्तविक नहीं होना चाहिए। स्वास्थ्य के रूप में बीमारी इतनी वास्तविक नहीं लगनी चाहिए। विज्ञान में कोई त्रुटि नहीं है, और हमारे जीवन को सभी के दैवीय सिद्धांत भगवान के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए वास्तविकता से शासित होना चाहिए।

8. 120 : 17-24

दिमागी चिकित्सा विज्ञान यह दिखाता है कि यह असंभव है लेकिन मन को सही मायने में गवाही देना या मनुष्य की वास्तविक स्थिति का प्रदर्शन करना है। इसलिए विज्ञान के दिव्य सिद्धांत, भौतिक इंद्रियों की गवाही को उलट कर, मनुष्य को सच्चाई में सामंजस्यपूर्ण रूप से अस्तित्व के रूप में प्रकट करता है, जो स्वास्थ्य का एकमात्र आधार है; और इस प्रकार विज्ञान सभी बीमारियों से इनकार करता है, बीमारों को चंगा करता है, झूठे सबूतों को उखाड़ फेंकता है और भौतिकवादी तर्क का खंडन करता है।

9. 288 : 31-7

शाश्वत सत्य को नष्ट कर देता है जो लगता है कि मनुष्यों ने त्रुटि से सीखा है, और भगवान के बच्चे के रूप में मनुष्य का वास्तविक अस्तित्व प्रकाश में आता है। सत्य का प्रदर्शन शाश्वत जीवन है। नश्वर मनुष्य कभी भी त्रुटि, पाप, बीमारी, और मृत्यु में विश्वास की लौकिक दुर्बलता से नहीं उठ सकता, जब तक कि वह यह न जान ले कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है। यह विश्वास कि जीवन और संवेदना शरीर में हैं, मनुष्य को ईश्वर की छवि के रूप में समझने की समझ से दूर होना चाहिए। तब आत्मा ने देह पर काबू पा लिया होगा।

10. 367 : 30-32

क्योंकि सत्य अनंत है, त्रुटि को कुछ भी नहीं के रूप में जाना जाना चाहिए। क्योंकि सत्य अच्छाई में सर्वशक्तिमान है, त्रुटि, सत्य के विपरीत, कोई शक्ति नहीं है।

11. 368 : 2-9

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

विज्ञान से प्रेरित विश्वास इस तथ्य में निहित है कि सत्य वास्तविक है और त्रुटि असत्य है। सत्य से पहले त्रुटि कायरता है। दिव्य विज्ञान जोर देकर कहता है कि समय यह सब साबित करेगा। सत्य और त्रुटि दोनों नश्वरता की आशंका से पहले से कहीं अधिक निकट आ गए हैं, और सत्य अभी भी स्पष्ट हो जाएगा क्योंकि त्रुटि स्वयं नष्ट हो गई है।

12. 174 : 17-21

सिनाई की गड़गड़ाहट और पहाड़ पर उपदेश उनके पाठ्यक्रम में सभी त्रुटि को झिड़क कर और पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की घोषणा करके युगों से आगे निकल जाएगा। सत्य का पता चलता है। इसे केवल अभ्यास करने की आवश्यकता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को

प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6